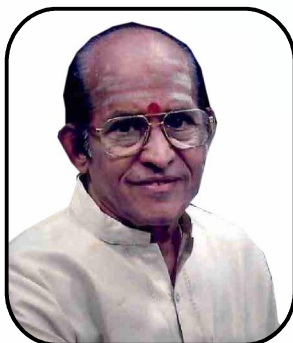


Padma Shri



SHRI GURUVAYUR DORAI

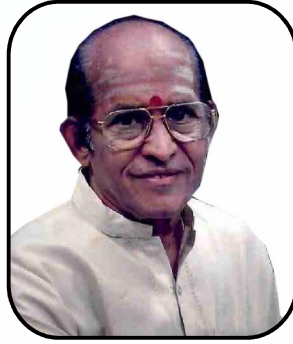
Shri Guruvayur Dorai is a percussionist representing the ancient South Indian drum “mridangam”. As a soloist, an accompanying artist, as well as a teacher, he is regarded as a musician with few parallels.

2. Born on 2nd July, 1935 into a musical family, Shri Dorai showed early signs of virtuosity that culminated in his performance on stage at the tender age of eight. He had the privilege of early training under Palakkad Subbu Iyer, E.P. Narayana Pisharody and later from the legendary Pazhani Subramania Pillai. Shri Dorai has carved for himself a “bani” or style known popularly as the Guruvayur Bani. This style expresses the unique handling of the base(thoppi) of the mridangam.

3. The stage performances of Shri Dorai are nothing but monumental. He provided percussion support to the living and past legendary musicians that elevated their own performance by the inimitable and unobtrusive beats of his magical fingers. He has performed in musical concerts in front of luminaries such as former Presidents Smt. Pratiba Patil (India), Shri Barack Obama (USA) and former Prime Minister Late Shri Manmohan Singh (India). In addition, Shri Dorai has played the role of a “Cultural Ambassador” by representing India in musical concert tours in more than twenty countries, participating in International Music Festivals as well as tours to USA and South Africa sponsored by the Indian Council of Cultural Relations.

4. The pedagogy of Shri Dorai is exemplified by his erudite contributions to students from national and international universities. Western Michigan University, Kalamazoo College, Universities of Washington, Pittsburgh, San Francisco and Sydney to name a few. Shri Dorai still maintains a stream of students who take advantage of his expertise to learn this musical art. Many of his students have themselves turned into stage performers both in India and abroad. The Guruvayur Dorai Trust founded by him is an example of his determination to acknowledge every year the contributions by other percussion artists.

5. Shri Dorai has been honoured with numerous regional, national and international awards and recognitions such as “Kalaimamani” by the Government of Tamil Nadu, Sangeet Natak Akademi Fellowship and Tagore Ratna by the Government of India, TTK Memorial Award by the Chennai Music Academy, Kerala Sangeetha Nataka Academy award by the State of Kerala, “Sangeetha Samrat” by the Bharthiya Vidhya Bhavan (Coimbatore), Man of the Year by the American Biographical Institute, Sangeetha Ratnakara by the Bhairavi Indian Fine Arts Society, Cleveland, USA, Honorary Patron of CMANA (USA), Laya Chakravarthi by Indian Fine Arts (USA), Palghat Mani Iyer Award by the Percussive Arts Centre, Bengaluru, “Asthana Vidwan” by the Kanchi Kamakoti Mutt, Sri Guruvayurappan Chembai Puraskar by Guruvayur Devasom.



श्री गुरुवायूर दोरै

श्री गुरुवायूर दोरै तालवादक हैं, जो प्राचीन दक्षिण भारतीय ढोल "मृदंगम" का प्रतिनिधित्व करते हैं। एकल कलाकार, सहयोगी कलाकार, साथ ही एक शिक्षक के रूप में, उन्हें संगीत जगत में अनोखे संगीतकार के रूप में माना जाता है।

2. 2 जुलाई, 1935 को संगीतमय परिवार में जन्मे, श्री दोरै ने कम उम्र में ही कला के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय दे दिया था, जिसकी परिणति आठ साल की छोटी सी उम्र में मंच पर उनके प्रदर्शन के रूप में हुई। उन्हें पलक्कडसुब्बू अय्यर, ई.पी. नारायण पिशारोडी और बाद में महान पंजानी सुब्रमण्यम पिल्लई की देख-रेख में प्रारंभिक प्रशिक्षण प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री दोरै ने अपने लिए एक "बानी" या शैली तैयार की है जिसे लोकप्रिय रूप से गुरुवायूर बानी के रूप में जाना जाता है। यह शैली मृदंग के आधार (थोप्पी) के अनूठे संचालन को व्यक्त करती है।

3. श्री दोरै के मंच प्रदर्शन वास्तव में अविस्मरणीय हैं। उन्होंने वर्तमान और अतीत के महान संगीतकारों को तालवाद्य सहायता प्रदान की, और इनकी जादुई उंगलियों की अनोखी और मधुर थाप ने उनके प्रदर्शन को और ऊंचा कर दिया। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपतियों श्रीमती प्रतिभा पाटिल (भारत), श्री बराक ओबामा (अमेरिका) और पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री मनमोहन सिंह (भारत) जैसे दिग्गजों के सम्मुख संगीत समारोहों में प्रदर्शन किया है। इसके अलावा, श्री दोरै ने बीस से अधिक देशों में संगीत समारोहों में भारत का प्रतिनिधित्व करके, अंतर्राष्ट्रीय संगीत समारोहों में भाग लेने के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित संयुक्त राज्य अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका के दौरों में भाग लेकर "सांस्कृतिक राजदूत" की भूमिका निभाई है।

4. श्री दोरै की शिक्षण शैली राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए उनके विद्वत्तापूर्ण योगदान से परिलक्षित होती है। इनमें वेस्टर्न मिशिगन विश्वविद्यालय, कालामाजू कॉलेज, वाशिंगटन, पिट्सबर्ग, सैन फ्रांसिस्को और सिडनी विश्वविद्यालय शामिल हैं। श्री दोरै के पास अभी भी ऐसे छात्रों का तांता लगा हुआ है जो इस संगीत कला को सीखने के लिए उनकी विशेषज्ञता का लाभ उठाते हैं। उनके कई छात्र खुद भारत और विदेश में स्टेज परफॉर्मर बन चुके हैं। उनके द्वारा स्थापित दोराई ट्रस्ट, अन्य तालवाद्य कलाकारों के योगदान को प्रतिवर्ष मान्यता देने के उनके दृढ़ संकल्प का उदाहरण है।

5. श्री दोरै को कई क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों और मान्यताओं से सम्मानित किया गया है जैसे कि तमिलनाडु सरकार द्वारा "कलईमामणि", भारत सरकार द्वारा संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप और टैगोर रत्न, चेन्नई संगीत अकादमी द्वारा टीटीके मेमोरियल पुरस्कार, केरल राज्य द्वारा केरल संगीतनाटक अकादमी पुरस्कार, भारतीय विद्या भवन (कोयंबटूर) द्वारा "संगीत सम्राट", अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट द्वारा मैन ऑफ द ईयर, भैरवी इंडियन फाइन आर्ट्स सोसाइटी, क्लीवलैंड, यूएसए द्वारा संगीत रत्नाकर, सीएमएएनए (यूएसए) के मानद संरक्षक, इंडियन फाइन आर्ट्स (यूएसए) द्वारा लय चक्रवर्ती, पक्युसिव आर्ट्स सेंटर, बेंगलुरु द्वारा पालघाटमणि अय्यर पुरस्कार, कांची कामकोटि मठद्वारा "अस्थाना विद्वान", गुरुवायूर देवासम द्वारा श्री गुरुवायुरप्पन चेम्बाई पुरस्कार।